श्री साई अमृत वाणी

श्री सच्चिदानन्द सद्गुरु
साई नाथ महाराज की जय
ॐ साई श्री साई जय जय साई
साई कृपा अवतरण

साई नाम ज्योति कलश, हे जग का आधार ।
चिन्तन ज्योति पुंज का, करिए बारम्बार ॥ १ ॥
सोते जगते साई कह, आते जाते नाम ।
मन ही मन से साई को, शत शत करें प्रणाम ॥ २ ॥
सुखदा हे शुभा कृपा, शक्ति शांति स्वरुप ।
है सत्य आनन्द मयी, साई कृपा अनूप ॥ ३ ॥
देव दनुज नर नाग पशु, पक्षी कीट पतंग ।
सब में साई समान है, साई सभी के संग ॥ ४ ॥
साई नाम वह नाव है, उस पर हो असवार ।
भले ही दुस्तर है बड़ा, करता भवसागर पार ॥ ५ ॥
मंत्रमय ही मानिये, साई राम भगवान ।
देवालय है साई का, साई शब्द गुण खान ॥ ६ ॥
साई नाम आराधिए, भीतर भर ये भाव ।
देव दया अवतरण का, धार चौगुना चाव ॥ ७ ॥
साई शब्द को ध्याइये, मन्त्र तारक मान ।
स्वशक्ति सत्ता जग करे, उपरि चक्र को यान ॥ ८ ॥
जीवन विरथा बीत गया, किया न साधन एक ।
कृपा हो मेरे साई की, मिले ज्ञान विवेक ॥ ९ ॥
बाबा ने अति कृपा कीनी, मोहे दीयो समझाई ।
अहंकार को छोड़ो भाई, जो तुम चाहो भलाई ॥ १० ॥

वंदना

स्वीकार करो मेरी वंदना, शिरडी के करतार ।
साई तुझे परमात्मन्, मंगल शिव शुभकार ॥
हाथ जोड़कर है खड़ा, सेवक तेरे द्वार ।
करता निश दिन वन्दना, साई करो स्वीकार ॥
चरणों पर मस्तक किये, विनय भक्ति के साथ ।
नमस्कार मेरा तुझे, होवे जग के नाथ ॥
साई नाम जप वंन्दना, यही साधना योग ।
जग झूठा और जगत के, मिथ्या हैं सब भोग ॥
नमो नमो हे साई प्रभु, तुम हो जग के नाथ ।
सबके पालनहार तुम, चरण नवाऊँ माथ ॥
दोनों कर को जोड़ कर, मस्तक घुटने टेक ।
तुझ को हो प्रणाम मम, शत शत कोटि अनेक ॥
तन से सेवा साई की, मन से सुमिरण नाम ।
धन से धृति धारणा, कर्म करो निष्काम ॥
भक्ति भाव शुभ भावना, मन में भर भरपूर ।
श्रद्धा से तुझ को नमूं, मेरे साई हजूर ॥

श्री साई महिमा

श्री साई राम परम सत्य, प्रकाश रुप,
परम पावन शिरडी निवासी, परम ज्ञान आनन्द
स्वरुप, प्रज्ञा प्रदाता, सच्चिदानंद स्वरुप,
परम पुरुष योगीराज, दयालु देवाधिदेव हैं,
उनको बार बार, नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार ।

श्री साई वाणी

नमो नमो पावन साई,
नमो नमो कृपाल गोसाई ।
साई अमृत पद पावन वाणी,
साई नाम धुन सुधा समानी ॥ १ ॥
नमो नमो सन्तन प्रतिपाला,
नमो नमो श्री साई दयाला ।
परम सत्य है परम विज्ञान,
ज्योति स्वरुप साई भगवान ॥ २ ॥
नमो नमो साई अविनाशी,
नमो नमो घट-घट के वासी ।
साई ध्वनि है नाम उच्चारण,
साई राम सुखसिद्धि कारण ॥ ३ ॥
नमो नमो श्री आत्म रामा,
नमो नमो प्रभु पूरन कामा ।
अमृत वाणी अमृत साई राम,
साई राम मुद् मंगल धाम ॥ ४ ॥
साई नाम मन्त्र जप जाप,
साई नाम मेटे त्रयी ताप ।
साईधुनि में लगे समाधि,
मिटे सब आधि व्याधि उपाधि ॥ ५ ॥
साई जाप है सरल समाधि,
हरे सब आधि व्याधि उपाधि ।
ऋद्धि सिद्धि और नव निधान,
दाता साई है सब सुख खान ॥ ६ ॥
साई साई श्री साई हरि,
मुक्ति वैराग्य का योग ।
साई साई श्री साई जप,
दाता अमृत भोग ॥ ७ ॥
जल थल वायु तेज आकाश,
साई से पावें सब प्रकाश ।
जल और पृथ्वी साई की माया,
अन्तहीन अन्तरिक्ष बनाया ॥ ८ ॥

नेति नेति कह वेद बखाने,
भेद साई का कोई न जाने ।
साई नाम है सब रस सार,
साई नाम जग तारण हार ॥ ९ ॥
साई नाम के भरो भण्डार,
साई नाम का सद्व्यवहार ।
इहां नाम की करो कमाई,
उंहा न होय कोई कठिनाई ॥ १० ॥
झोली साई नाम से भरिऐ,
संचित साई नाम धन करिए ।
जुड़े नाम का जब धन माल,
साई कृपा ले अन्त सम्भाल ॥ ११ ॥
साई साई पद शक्ति जगावे,
साई साई धुन जभी रमावे ।
साई नाम जब जगे अभंग,
चेतन भाव जगे सुख संग ॥ १२ ॥
भावना भक्ति भरे भजनीक,
भजते साई नाम रमणीक ।
भजते भक्त भाव भरपुर,
भ्रम भय भेदभाव से दूर ॥ १३ ॥
साई साई सुगुणी जन गाते,
स्वर संगीत से साई रिझाते ।
कीर्तन कथा करते विद्वान,
सार सरस संग साधनवान् ॥ १४ ॥
काम क्रोध और लोभ ये,
तीन पाप के मूल ।
नाम कुल्हाड़ी हाथ ले,
कर इनको निर्मूल ॥ १५ ॥
साई नाम है सब सुख खान,
अन्त करे सब का कल्याण ।
जीवन साई से प्रीति करना,
मरना मन से साई न बिसरना ॥ १६ ॥
साई भजन बिन जीवन जीना,
आठों पहर हलाहल पीना ।
भीतर साई का रूप समावे,
मस्तक पर प्रतिमा छा जावे ॥ १७ ॥
जब जब ध्यान साई का आवे,
रोम रोम पुल्कित हो जावे ।
साई कृपा सूरज का उगना,
हृदय साई पंकज खिलना ॥ १८ ॥
साई नाम मुक्ता मणि,
राखो सूत पिरोय ।
पाप ताप न रहे,
आत्म दर्शन होय ॥ १९ ॥
सत्य मूलक है रचना सारी,
सर्व सत्य प्रभु साई पसारी ।
बीज से तरु मकड़ी से तार,
हुआ त्यों साई जग से विस्तार ॥ २० ॥
साई का रुप हृदय में धारो,
अन्तरमन से साई पुकारो ।
अपने भगत की सुनकर टेर,
कभी न साई लगाते देर ॥ २१ ॥
धीर वीर मन रहित विकार,
तन से मन से कर उपकार ।
सदा ही साई नाम गुण गावे,
जीवन मुक्त अमर पद पावे ॥ २२ ॥
साई बिना सब नीरस स्वाद,
ज्यों हो स्वर बिना राग विषाद ।
साई बिना नहीं सजे सिंगार,
साई नाम है सब रस सार ॥ २३ ॥
साई पिता साई ही माता,
साई बन्धु साई ही भ्राता ।
साई जन जन के मन रंजन,
साई सब दुःख दर्द विभंजन ॥ २४ ॥
साई नाम दीपक बिना,
जन मन में अन्धेर ।
इसी लिये हे मम मन,
नाम सुमाला फेर ॥ २५ ॥
जपते साई नाम महा माला,
लगता नरक द्वार पै ताला ।
राखो साई पर इक विश्वास,
सब तज करो साई की आस ॥ २६ ॥
जब जब चढे साई का रंग,
मन में छाए प्रेम उमंग ।
जपते साई साई जप पाठ,
जलते कर्मबन्ध यथा काठ ॥ २७ ॥
साई नाम सुधा रस सागर,
साई नाम ज्ञान गुण आगर ।
साई जाप रवि तेज समान,
महा मोह तम हरे अज्ञान ॥ २८ ॥
साई नाम धुन अनहद नाद,
नाम जपे मन हो विस्माद ।
साई नाम मुक्ति का दाता,
ब्रह्मधाम वह खुद पहुँचाता ॥ २९ ॥
हाथ से करिए साई का कार,
पग से चलिए साई के द्वार
मुख से साई सुमिरण करिए,
चित सदा चिन्तन में धरिए ॥ ३० ॥
कानों से यश साई का सुनिए,
साई धाम का मार्ग चुनिए ।
साई नाम पद अमृतवाणी,
साई नाम धुन सुधा समानी ॥ ३१ ॥
आप जपो औरों को जपावो,
साई धुनि को मिलकर गावो ।
साई नाम का सुनकर गाना,
मन अलमस्त बने दिखाना ॥ ३२ ॥
पल पल उठे साई तरंग,
चढ़े नाम का गूढ़ा रंग ।
साई कृपा है उच्चतर योग,
साई कृपा है शुभ संयोग ॥ ३३ ॥
साई कृपा सब साधन मर्म,
साई कृपा संयम सत्य धर्म ।
साई नाम मन में बसाना,
सुपथ साई कृपा का पाना ॥ ३४ ॥
मन में साई धुन जब फिरे,
साई कृपा तब ही अवतरे ।
रहुं मैं साई में हो कर लीन,
जैसे जल में हो मीन अदीन ॥ ३५ ॥
साई नाम को सिमरिये,
साई साई एक तार ।
परम पाठ पावन परम,
करता भव से पार ॥ ३६ ॥
साई कृपा भरपूर मैं पाउं,
परम प्रभु को भीतर लाउं ।
साई ही साई साई कह मीत,
साई से कर ले सांची प्रीत ॥ ३७ ॥
साई ही साई का दर्शन करिए,
मन भीतर इक आनन्द भरिए ।
साई की जब मिल जाए भिक्षा,
फिर मन में कोई रहे न इच्छा ॥ ३८ ॥
जब जब मन का तार हिलेगा,
तब तब साई का प्यार मिलेगा ।
मिटेगी जग से आनी जानी,
जीवन मुक्त होय यह प्राणी ॥ ३९ ॥
शिरडी के हैं साई हरि,
तीन लोक के नाथ ।
बाबा हमारे पावन प्रभु,
सदा के संगी साथ ॥ ४० ॥
साई धुनि ज़ब पकड़े जोर,

खींचे साई प्रभु अपनी ओर ।
मंदिर मंदिर बस्ती बस्ती,
छा जाए साईनाम की मस्ती ॥ ४१ ॥
अमृतरुप साई गुण गान,
अमृत कथन साई व्याख्यान ।
अमृत वचन साई की चर्चा,
सुधा सम गीत साई की अर्चा ॥ ४२ ॥
शुभ रसना वही कहावे,
साई राम जहां नाम सुहावे ।
शुभ कर्म है नाम कमाई,
साई राम परम सुखदाई ॥ ४३ ॥
जब जी चाहे दर्शन पाईये,
जै जे कार साई की गाइये ।
साई नाम की धुनि लगाइये,
सहज की भवसागर तर जाईये ॥ ४४ ॥
बाबा को जो भजे निरन्तर,
हर दम ध्यान लगावे ।
बाबा में मिल जाये अन्त में,
जनम सफेल हेा जाव ॥ ४५ ॥
धन्य धन्य श्री साई उजागर,
धन्य धन्य करुणा के सागर ।
साई नाम मुद मंगलकारी,
विघ्न हरे सब पातक हारी ॥ ४६ ॥
धन्य धन्य श्री साई हमारे,
धन्य धन्य भक्तन रखवारे ।
साई नाम शुभ शकुन महान्,
स्वस्ति शान्ति शिवकर कल्याण ॥ ४७ ॥
धन्य धन्य सब जग के स्वामी,
धन्य धन्य श्री साई नमामी ।
साई साई मन मुख से गाना,
मानो मधुर मनोरथ पाना ॥ ४८ ॥
साई नाम जो जन मन लावे,
उस में शुभ सभी बस जावे ।
जहां हो साई नाम धुन नाद,
वहां से भागे विषम विषाद ॥ ४९ ॥
साई नाम मन तृप्त बुझावे,
सुधा रस सींच शांति ले आवे ।
साई साई जपिए कर भाव,
सुविधा सुविधि बने बनाव ॥ ५० ॥
छल कपट और खोट हैं,
तीन नरक के द्वार ।
झूठ करम को छोड के
करो सत्य व्यवहार ॥ ५१ ॥

जप तप तीर्थ ज्ञान ध्यान,
सब मिल नाहीं साई समान ।
सर्व व्यापक साई ज्ञाता,
मन वांछित प्राणि फलपाता ॥ ५२ ॥
जहां जगत में आवो जावो,
साई सुमिर साई को गावो ।
साई सभी में एक समान,
सब रुप को साई का जान ॥ ५३ ॥
मैं और मेरा कुछ नहीं अपना,
साई का नाम सत्य जग सपना ।
इतना जान लेहु सब कोय,
साई को भजे साई का होय ॥ ५४ ॥
ऐसे मन जब होवे लीन,
जल में प्यासी रहे न मीन ।
चित चढे इक रंग अनूप,
चेतन हो जाए साई स्वरुप ॥ ५५ ॥
जिसमें साई नाम शुभ जागे,
उस के पाप ताप सब भागे ।
मन से साई नाम जो उच्चारे,
उस के भागें भ्रम भय सारे ॥ ५६ ॥
सुख-दुःख तेरी देन है,
सुख-दुःख में तू आप ।
रोम-रोम में हे साई,
तू ही रह्यो व्याप ॥ ५७ ॥
जै-जै साई सच्चिदानन्दा
मुरली मनोहर परमानन्दा ।
पारब्रह्म परमेश्वर गोविन्दा,
निर्मल पावन ज्योत अखण्डा ॥ ५८ ॥
एकै ने सब खेल रचाया,
जो दीखे वो सब है माया ।
एको एक एक भगवान,
दो को तू ही माया जान ॥ ५९ ॥
बाहर भरम भूले संसार,
अन्दर प्रीतम साई अपार ।
जा को आप चाहे भगवन्त,
सो ही जाने साई अनन्त ॥ ६० ॥
जिस में बस जाय साई सुनाम,
होवे वह जन पूर्णकाम ।
चित मे साई नाम जो सिमरे,
निश्चय भव सागर से तरे ॥ ६१ ॥
साई सिमरन होवे सहाई,
साई सिमरन है सुखदाई ।
साई सिमरन सब से ऊँचा,

साई शक्ति सुख ज्ञान समूचा ॥ ६२ ॥
सुख दाता आपद् हरन,
साई गरीब निवाज ।
अपने बच्चों के साई,
सभी सुधारे काज ॥ ६३ ॥
मात पिता बान्धव सुत दारा,
धन जन साजन सखा प्यारा ।
अन्त काल दे सके न सहारा,
साई नाम तेरा तारन हारा ॥ ६४ ॥
आपन को न मान शरीर
तब तू जाने पर की पीड़ ।
घट में बाबा को पहचान,
करन करावन वाला जान ॥ ६५ ॥
अन्तरयामी जा को जान,
घट से देखो आठों याम ।
सिमरन साई नाम है संगी,
सखा स्नेही सुहृद् शुभ अंगी ॥ ६६ ॥
युग युग का है साई सहेला,
साई भक्त नहीं रहे अकेला ।
बाधा बड़ी विषम जब आवे,
वैर विरोध विघ्न बढ़ जावे ॥ ६७ ॥
साई नाम जपिए सुख दाता,
सच्चा साथी जो हितकर त्राटा ।
पूंजी साई नाम की पाइये,
पाथेय साथ नाम ले जाइये ॥ ६८ ॥
साई जाप कही ऊँची करणी,
बाधा विघ्न बहु दुःख हरणी ।
साई नाम महा मन्त्र जपना,
है सुव्रत नेम तप तपना ॥ ६९ ॥
बाबा से कर साची प्रीत,
यह ही भगत जनों की रीत ।
तू तो है बाबा का अंग,
जैसे सागर बीच तरंग ॥ ७० ॥
दीन दुःखी के सामने,
जिसका झुकता शीश ।
जीवन भर मिलता उसे,
बाबा का आशीश ॥ ७१ ॥
लेने वाले हाथ दो,
साई के सौ द्वार ।
एक द्वार को पूज ले,
हो जायेगा पार ॥ ७२ ॥

नमन

जय जय साई परमेश्वरा,
जय जय साई परमेश्वरा ।
जय जय साई पुरुषाय नमः,
जय जय साई परमेश्वरा ।
जय जय साई शंकराय नमः,
जय जय साई परमेश्वरा ।
जय जय साई रामाय नमः,
जय जय साई परमेश्वरा ।
जय जय साई माधवाय नमः,
जय जय साई परमेश्वरा ।
जय जय साई हनुमते नमः,
जय जय साई परमेश्वरा ।
जय जय साई अकाल, पुरुषाय नमः,
जय जय साई परमेश्वरा ।
जय जय साई नाथाय नमः,
जय जय साई परमेश्वरा ।

धुन

जय साई हरे जय साई हरे, साई राम हरे साई राम हरे
जय साई हरे जय साई हरे, जय साई हरे जय साई हरे
जो साई जपे उसके पाप कटे, भवसागर को वो पार करे
जय साई हरे जय साई हरे, जय साई हरे जय साई हरे
जो ध्यान धरे साई दर्शन करे, साई उसके सारे कष्ट हरे
जय साई हरे जय साई हरे, जय साई हरे जय साई हरे
साई रंग रगे साई प्रीत जगे, साई चरणो पर जो माथा धरे
जय साई हरे जय साई हरे, जय साई हरे जय साई हरे
जो शरण पड़े साई रक्षा करे, साई उसके सब भंडार भरे
जय साई हरे जय साई हरे, जय साई हरे जय साई हरे

मंगलमय प्रार्थना

सर्वेषां स्वस्ति भवतु, सर्वेषां शान्तिर्भवतु ।
सर्वेषां मंगलं भवतु, सर्वेषां पूर्णं भवतु ।
सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ।